International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मुंडेश्वरी मंदिर और कैमूर की धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत: ऐतिहासिक अध्ययन

धीरज कुमार सिंह

UGC-NET (इतिहास)

सारांश

मुंडेश्वरी मंदिर कैमूर जिले की प्रमुख ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहरों में से एक है। यह मंदिर कैमूर की पहाड़ियों में स्थित है और अपनी प्राचीनता, अष्टकोणीय स्थापत्य, शिव तथा शक्ति उपासना और स्थानीय धार्मिक परंपराओं के कारण विशेष महत्व रखता है। मंदिर से प्राप्त अभिलेख और आसपास मिले स्थापत्य अवशेष यह संकेत देते हैं कि मुंडेश्वरी पहाड़ी प्राचीन काल से ही धार्मिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रही होगी (Banerji, 1907–1908; Neuss, 2003)। मंदिर की तिथि के संबंध में विद्वानों में एक मत नहीं है। बिहार पर्यटन विभाग इसे 108 ईस्वी से जोड़ता है, जबकि अभिलेख और स्थापत्य के आधार पर कई विद्वानों ने अलग-अलग काल निर्धारित किए हैं। हाल के स्थापत्य अध्ययन में वर्तमान अष्टकोणीय मंदिर को 16वीं–17वीं शताब्दी का माना गया है और यह संभावना व्यक्त की गई है कि इसमें पुराने मंदिरों के स्थापत्य अवशेषों का पुनः उपयोग हुआ (Buckee, 2020)। इसलिए मुंडेश्वरी मंदिर के इतिहास को किसी एक तिथि तक सीमित करना उचित नहीं है। यह लेख उपलब्ध अभिलेखीय, पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर मंदिर के इतिहास, स्थापत्य, धार्मिक परंपरा और कैमूर की सांस्कृतिक विरासत में उसके स्थान का अध्ययन करता है।

मुख्य शब्द: मुंडेश्वरी मंदिर, कैमूर, धार्मिक विरासत, सांस्कृतिक विरासत, अष्टकोणीय स्थापत्य, शैव परंपरा, शक्ति उपासना, ऐतिहासिक अध्ययन

परिचय

बिहार का इतिहास केवल बड़े नगरों, राजवंशों और राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है। यहाँ अनेक ऐसे धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल हैं, जिनके माध्यम से स्थानीय समाज की पुरानी परंपराओं, आस्था और ऐतिहासिक स्मृति को समझा जा सकता है। कैमूर जिले का मुंडेश्वरी मंदिर ऐसा ही एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह मंदिर कैमूर की पहाड़ी पर स्थित है और आज भी धार्मिक गतिविधियों का केंद्र बना हुआ है। जिला प्रशासन के अनुसार मंदिर लगभग 600 फीट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और यहाँ पत्थर से बना अष्टकोणीय मंदिर, पंचमुखी शिवलिंग तथा देवी की प्रतिमा प्रमुख आकर्षण हैं (District Administration, Kaimur, n.d.).

मुंडेश्वरी मंदिर का महत्व केवल इस कारण नहीं है कि इसे बहुत प्राचीन मंदिर माना जाता है। इसका महत्व इस बात में भी है कि यहाँ से अभिलेख, मूर्तियाँ और स्थापत्य अवशेष मिले हैं, जिनसे कैमूर क्षेत्र के धार्मिक इतिहास को समझने में सहायता मिलती है। 1907–1908 में आर. डी. बनर्जी ने मुंडेश्वरी से प्राप्त उदयसेन के अभिलेख का अध्ययन प्रकाशित किया था। बाद में एन. जी. मजूमदार और अन्य विद्वानों ने भी इस अभिलेख तथा मंदिर से जुड़े इतिहास पर काम किया (Banerji, 1907–1908; Neuss, 2003) ।

मंदिर की प्राचीनता के विषय में अलग-अलग मत मिलते हैं। बिहार पर्यटन की आधिकारिक वेबसाइट मंदिर को 108 ईस्वी से जोड़ती है, जबकि कैमूर जिला प्रशासन यहाँ मिले अभिलेख को 389 ईस्वी के मध्य का बताता है (Bihar Tourism, n.d.; District Administration, Kaimur, n.d.). दूसरी ओर, आधुनिक स्थापत्य अध्ययन में Fiona Buckee (2020) ने वर्तमान अष्टकोणीय मंदिर की तिथि को बहुत बाद का माना है। इन मतों से स्पष्ट है कि मुंडेश्वरी का इतिहास अभी भी अध्ययन का विषय है। इसलिए उपलब्ध प्रमाणों को साथ रखकर अध्ययन करना अधिक उचित है।

अध्ययन के उद्देश्य

- मुंडेश्वरी मंदिर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- मंदिर की स्थापत्य विशेषताओं और उससे जुड़े पुरातात्त्विक प्रमाणों को समझना।
- मुंडेश्वरी में प्रचलित शिव और शक्ति उपासना की परंपरा का अध्ययन करना।
- कैमूर की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत में मंदिर के स्थान को स्पष्ट करना।
- मंदिर की प्राचीनता से संबंधित विभिन्न विद्वानों के मतों को सामने रखना।
- आधुनिक समय में मंदिर के संरक्षण और धार्मिक पर्यटन के महत्व पर विचार करना.

अध्ययन की पद्धति

इस अध्ययन में ऐतिहासिक और वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए अभिलेखीय सामग्री, पुरातात्त्विक अध्ययनों, शोध-पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा बिहार सरकार और कैमूर जिला प्रशासन की आधिकारिक सामग्री का उपयोग किया गया है। आर. डी. बनर्जी के अभिलेख संबंधी अध्ययन और जर्गेन न्यूस के विस्तृत अध्ययन से मंदिर के अभिलेखीय और स्थापत्य पक्ष को समझने में सहायता मिलती है (Banerji, 1907–1908; Neuss, 2003) । Hans T. Bakker (2019) ने भी उदयसेन के अभिलेख को नए दृष्टिकोण से देखा है। Fiona Buckee (2020) का अध्ययन मंदिर की वर्तमान संरचना की तिथि और स्थापत्य को लेकर एक महत्वपूर्ण नया मत प्रस्तुत करता है।
सरकारी स्रोतों का उपयोग मंदिर की वर्तमान स्थिति, स्थान और संरक्षण संबंधी जानकारी के लिए किया गया है। इन स्रोतों को पुरातात्त्विक और विद्वतापूर्ण अध्ययनों के साथ रखकर देखा गया है, ताकि केवल पर्यटन संबंधी विवरण पर निर्भर न रहना पड़े।

मुंडेश्वरी मंदिर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुंडेश्वरी मंदिर कैमूर की पहाड़ियों में स्थित है। वर्तमान मंदिर पत्थर से निर्मित अष्टकोणीय संरचना है। मंदिर के भीतर देवी मुंडेश्वरी और शिव की उपासना से संबंधित परंपरा दिखाई देती है। बिहार पर्यटन विभाग के अनुसार यहाँ शिव और शक्ति दोनों की पूजा की जाती है तथा गणेश, सूर्य और विष्णु की प्रतिमाएँ भी मंदिर परिसर से जुड़ी हैं (Bihar Tourism, n.d.).
मंदिर के इतिहास के अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक उदयसेन का अभिलेख है। आर. डी. बनर्जी ने इस अभिलेख को 'Mundesvari Inscription of Udayasena' के नाम से प्रकाशित किया। अभिलेख में उदयसेन के शासनकाल के वर्ष 30 का उल्लेख मिलता है और मंडलेश्वर देवता के लिए दान की बात दर्ज है (Banerji, 1907–1908)। इससे यह संकेत मिलता है कि मुंडेश्वरी पहाड़ी पर धार्मिक गतिविधियाँ बहुत पहले से मौजूद थीं।
बाद के अध्ययनों में इस अभिलेख की तिथि और उसके संदर्भ को लेकर अलग-अलग विचार सामने आए। Bakker (2019) ने अभिलेख को मंदिर के इतिहास और स्थल पर मौजूद पुराने धार्मिक केंद्र के संदर्भ में पुनः देखा है। Neuss (2003) ने भी उपलब्ध स्थापत्य और अभिलेखीय सामग्री का विस्तृत अध्ययन किया। इन अध्ययनों से यह बात सामने

आती है कि मुंडेश्वरी पहाड़ी का इतिहास केवल वर्तमान मंदिर की इमारत से नहीं समझा जा सकता। पहाड़ी पर मिले अन्य अवशेष भी इसके पुराने धार्मिक महत्व की ओर संकेत करते हैं।

मंदिर की प्राचीनता और उससे जुड़े मत

मुंडेश्वरी मंदिर की प्राचीनता इस स्थल की सबसे अधिक चर्चा होने वाली विशेषताओं में है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट मंदिर को 108 ईस्वी से जोड़ती है और इसे प्राचीन कार्यशील मंदिर के रूप में प्रस्तुत करती है (Bihar Tourism, n.d.). दूसरी ओर, कैमूर जिला प्रशासन मंदिर के अभिलेख को 389 ईस्वी के मध्य का बताता है (District Administration, Kaimur, n.d.). इन दोनों सरकारी विवरणों के बीच भी अंतर दिखाई देता है।

अभिलेखीय अध्ययन में उदयसेन के वर्ष 30 वाले अभिलेख का विशेष महत्व है। Banerji (1907–1908) ने अभिलेख को प्रकाशित करते हुए उसमें मंडलेश्वर देवता को दिए गए दान का उल्लेख किया। Bakker (2019) ने इस अभिलेख को फिर से पढ़ते हुए मंदिर के इतिहास और धार्मिक संरचना पर विचार किया। इससे पता चलता है कि स्थल का धार्मिक महत्व वर्तमान मंदिर की संरचना से पहले का हो सकता है।

आधुनिक स्थापत्य अध्ययन ने इस विषय को और जटिल बनाया है। Buckee (2020) ने मंदिर की अष्टकोणीय योजना, दरवाजों और अन्य स्थापत्य अवयवों का अध्ययन करके तर्क दिया कि वर्तमान अष्टकोणीय मंदिर संभवतः 16वीं–17वीं शताब्दी में निर्मित हुआ और इसमें पुराने मंदिरों के कुछ स्थापत्य अवशेषों का पुनः उपयोग किया गया। यह मत पहले से चले आ रहे प्रारंभिक तिथि के मत से अलग है। इसलिए मुंडेश्वरी की प्राचीनता पर चर्चा करते समय अलग-अलग प्रमाणों और विद्वानों के मतों को स्पष्ट करना आवश्यक है।

मंदिर की स्थापत्य विशेषताएँ

मुंडेश्वरी मंदिर की सबसे उल्लेखनीय विशेषता इसकी अष्टकोणीय योजना है। पत्थर से बनी यह संरचना सामान्य उत्तर भारतीय मंदिरों की तुलना में अलग दिखाई देती है। इसी कारण मंदिर स्थापत्य के इतिहास में इसका विशेष स्थान माना जाता है। Buckee (2020) ने इसकी योजना और स्थापत्य अवयवों का विस्तार से अध्ययन किया है और इसे उत्तर भारतीय मंदिर स्थापत्य के सामान्य विकासक्रम से अलग दिखाई देने वाली संरचना बताया है।

मंदिर के भीतर केंद्रीय भाग में पंचमुखी शिवलिंग स्थित है। देवी की प्रतिमा भी धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जिला प्रशासन के विवरण में देवी को वाराही रूप से जोड़ा गया है और मंदिर में नंदी की प्रतिमा का भी उल्लेख मिलता है (District Administration, Kaimur, n.d.). मंदिर में प्रयुक्त पत्थर, दरवाजों की बनावट, स्तंभों और अन्य स्थापत्य अवयवों से इसके लंबे निर्माण और परिवर्तन की संभावना पर विचार किया गया है।

Neuss (2003) ने मंदिर और पहाड़ी के आसपास बिखरे स्थापत्य अवशेषों का अध्ययन किया। उनके अनुसार वर्तमान मंदिर को समझने के लिए आसपास मिले अवशेषों को भी देखना आवश्यक है। इससे यह संभावना सामने आती है कि मुंडेश्वरी पहाड़ी पर किसी समय इससे बड़ा धार्मिक परिसर रहा होगा। इस कारण मंदिर का स्थापत्य इतिहास कैमूर के प्राचीन धार्मिक इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता।

धार्मिक परंपरा और आस्था

मुंडेश्वरी मंदिर में शिव और शक्ति दोनों की उपासना दिखाई देती है। यह धार्मिक परंपरा मंदिर को स्थानीय समाज में विशेष स्थान देती है। बिहार पर्यटन विभाग के अनुसार यहाँ शिवरात्रि और रामनवमी जैसे अवसरों पर विशेष धार्मिक गतिविधियाँ होती हैं (Bihar Tourism, n.d.). मंदिर में देवी की पूजा के साथ शिवलिंग की पूजा भी होती है। इस प्रकार यहाँ की धार्मिक परंपरा में शैव और शक्त परंपराओं का साथ दिखाई देता है।

धार्मिक स्थलों का महत्व केवल उनके पुराने होने से निर्धारित नहीं होता। स्थानीय समाज में किसी स्थल के प्रति लगातार बनी आस्था भी उसके महत्व को बनाए रखती है। मुंडेश्वरी के मामले में आज भी श्रद्धालुओं का आना और पूजा-पाठ जारी रहना इस बात को दिखाता है कि यह स्थल स्थानीय धार्मिक जीवन का हिस्सा है। इस कारण मंदिर को केवल पुरातात्त्विक स्मारक के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसे जीवित धार्मिक परंपरा के रूप में भी समझना चाहिए।

लोकविश्वास और स्थानीय स्मृति

कैमूर में मुंडेश्वरी मंदिर से जुड़ी अनेक स्थानीय मान्यताएँ प्रचलित हैं। इन मान्यताओं में देवी की शक्ति, मंदिर की प्राचीनता और पूजा की परंपरा से संबंधित बातें शामिल हैं। इतिहास लिखते समय ऐसी लोकमान्यताओं को सीधे ऐतिहासिक तथ्य मानना उचित नहीं है। लेकिन इन्हें स्थानीय स्मृति और धार्मिक संस्कृति के स्रोत के रूप में देखा जा सकता है।

किसी ऐतिहासिक स्थल के साथ जुड़ी लोकस्मृति यह बताती है कि स्थानीय समाज उस स्थल को किस रूप में देखता है। मुंडेश्वरी के मामले में मंदिर केवल एक पुरानी इमारत नहीं है, बल्कि स्थानीय धार्मिक पहचान का हिस्सा है। इसलिए इसके अध्ययन में अभिलेख और स्थापत्य के साथ स्थानीय परंपराओं को भी ध्यान में रखना उपयोगी है।

कैमूर की धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत में मुंडेश्वरी का स्थान

कैमूर जिला प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। कैमूर की पहाड़ियों, पुराने धार्मिक स्थलों और स्थानीय परंपराओं ने यहाँ की सांस्कृतिक पहचान को आकार दिया है। मुंडेश्वरी मंदिर इस विरासत का प्रमुख हिस्सा है। मंदिर की प्राचीनता से जुड़े प्रमाण, इसकी अलग स्थापत्य योजना और निरंतर धार्मिक उपयोग इसे अन्य स्थानीय स्थलों से अलग महत्व देते हैं।

मुंडेश्वरी मंदिर को कैमूर की व्यापक सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में देखने पर यह भी स्पष्ट होता है कि धार्मिक स्थल स्थानीय समाज, पर्यटन और क्षेत्रीय पहचान से जुड़े रहते हैं। मंदिर की ओर आने वाले श्रद्धालु और पर्यटक स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करते हैं। इस दृष्टि से मंदिर का अध्ययन इतिहास के साथ-साथ सांस्कृतिक पर्यटन के अध्ययन से भी जुड़ता है।

हालाँकि, पर्यटन के विकास के साथ संरक्षण का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। मंदिर की ऐतिहासिक संरचना और आसपास के पुरातात्त्विक अवशेषों को सुरक्षित रखना आवश्यक है। पर्यटन बढ़ाने के प्रयास ऐसे होने चाहिए जिनसे धार्मिक गतिविधियों और पुरातात्त्विक संरक्षण के बीच संतुलन बना रहे।

संरक्षण और आधुनिक समय

मुंडेश्वरी मंदिर को पुरातात्त्विक महत्व का स्थल माना गया है और इसके संरक्षण की आवश्यकता लंबे समय से रही है। बिहार सरकार की पर्यटन सामग्री में भी मंदिर को संरक्षित ऐतिहासिक स्थल के रूप में प्रस्तुत किया गया है (Bihar Tourism, n.d.). मंदिर के आसपास आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या और पर्यटन गतिविधियों के कारण संरक्षण का महत्व और बढ़ जाता है।

संरक्षण केवल मंदिर की इमारत की मरम्मत तक सीमित नहीं होना चाहिए। मंदिर परिसर के आसपास मौजूद पुराने पत्थर, मूर्तियाँ, अभिलेख और अन्य स्थापत्य अवशेष भी ऐतिहासिक सामग्री हैं। इनके व्यवस्थित अभिलेखन, वैज्ञानिक संरक्षण और शोधकर्ताओं के लिए उपलब्धता से मुंडेश्वरी के इतिहास पर आगे बेहतर अध्ययन किया जा सकता है।

निष्कर्ष

मुंडेश्वरी मंदिर कैमूर की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अभिलेख, स्थापत्य और धार्मिक परंपराएँ इस स्थल के लंबे इतिहास की ओर संकेत करती हैं। उदयसेन का अभिलेख मंदिर के इतिहास के अध्ययन में विशेष महत्व रखता है, जबकि बाद के स्थापत्य अध्ययनों ने वर्तमान मंदिर की तिथि और निर्माण को लेकर नए प्रश्न उठाए हैं (Banerji, 1907–1908; Bakker, 2019; Buckee, 2020)।

मंदिर की प्राचीनता के संबंध में अलग-अलग तिथियाँ और मत मिलते हैं। इसलिए किसी एक तिथि को अंतिम सत्य मानने के बजाय उपलब्ध प्रमाणों का तुलनात्मक अध्ययन करना अधिक उचित है। इससे मुंडेश्वरी के इतिहास को अधिक संतुलित ढंग से समझा जा सकता है।

मुंडेश्वरी का महत्व केवल इसके अतीत में नहीं है। आज भी यह धार्मिक आस्था का केंद्र है और कैमूर की सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसके संरक्षण, वैज्ञानिक अध्ययन और संतुलित पर्यटन विकास पर ध्यान देना आवश्यक है। भविष्य में पुरातात्त्विक खुदाई, स्थापत्य अवशेषों का व्यवस्थित अध्ययन और अभिलेखों की नई व्याख्या मुंडेश्वरी के इतिहास को और स्पष्ट कर सकती है।

संदर्भ-सूची

1. Agrawala, P. K. (1987). Observations on the Mundeshvari temple. In M. S. Nagaraja Rao (Ed.), Kusumāñjali: New interpretation of Indian art & culture (Vol. 1, pp. 179–183).
2. Asher, F. M. (1980). The art of eastern India, 300–800. University of Minnesota Press.
3. Archaeological Survey of India. (1904). Annual report of the Archaeological Survey, Bengal Circle, for the year ending with April 1904. Government of India.
4. Bakker, H. T. (2019). The temple of Maṇḍaleśvarasvāmin: The Muṇḍeśvarī inscription of the time of Udayasena reconsidered. In H. T. Bakker & H. Isaacson (Eds.), Holy ground: Where art and text meet: Studies in the cultural history of India (pp. 391–404). Brill.
5. Banerji, R. D. (1907–1908). Mundesvari inscription of Udayasena: The [Harsha] year 30. Epigraphia Indica, 9, 289–290.
6. Bihar Tourism. (n.d.). Mundeshwari Devi Temple. Government of Bihar. https://tourism.bihar.gov.in/en/destinations/kaimur/mundeshwari-devi-temple
7. Bloch, T. (1902–1903). The temple of Muṇḍeśvarī. In Annual report of the Archaeological Survey, Bengal Circle, for the year ending with April 1903. Archaeological Survey of India.
8. Buckee, F. (2020). The curious case of the octagonal temple: An architectural analysis and revised history of the temples of Muṇḍeśvarī Hill. Archives of Asian Art, 70(2), 173–197. https://doi.org/10.1215/00666637-8620366
9. District Administration, Kaimur. (n.d.). Maa Mundeshwari Temple (Bhagwanpur). Government of Bihar. https://kaimur.nic.in/tourist-place/maa-mundeshwari-temple-bhagwanpur/
10. Neuss, J. (2003). The temple of Muṇḍeśvarī: Reconsidering the evidence. Berliner Indologische Studien, 15/16/17, 531–585.